سَيَقُوْلُ السُّفَهَآءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلّٰىهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِىْ كَانُوْا

अब कहेंगे[255] बे वुक़ूफ़ लोग किस ने फेर दिया मुसल्मानों को उन के उस क़िब्ले से जिस पर

عَلَيْهَا ؕ قُلْ لِّلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَ الْمَغْرِبُ ؕ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ

थे[256] तुम फ़रमा दो कि पूरब पश्चिम (मशरिक़ व मग़रिब) सब **अल्लाह** ही का है[257] जिसे चाहे सीधी राह

مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۱۴۲﴾ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى

चलाता है और बात यूं ही है कि हम ने तुम्हें किया सब उम्मतों में अफ़्ज़ल कि तुम लोगों पर

النَّاسِ وَيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا ؕ وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِىْ

गवाह हो[258] और येह रसूल तुम्हारे निगहबान व गवाह[259] और ऐ महबूब तुम पहले जिस

255 शाने नुज़ूल : येह आयत यहूद के हक़ में नाज़िल हुई जब बजाए बैतुल मक़्दिस के का'बए मुअ़ज़्ज़मा को क़िब्ला बनाया गया इस पर उन्हों ने ता'न किये क्यूं कि येह उन्हें ना गवार था और वोह नस्ख़ के क़ाइल न थे। एक क़ौल पर येह आयत मुश्रिकीने मक्का के और एक क़ौल पर मुनाफ़िक़ीन के हक़ में नाज़िल हुई और येह भी हो सकता है कि इस से कुफ़्फ़ार के येह सब गुरौह मुराद हों क्यूं कि ता'नो तश्नीअ़ में सब शरीक थे और कुफ़्फ़ार के ता'न करने से क़ब्ल क़ुरआने पाक में इस की ख़बर दे देना ग़ैबी ख़बरों में से है। ता'न करने वालों को बे वुक़ूफ़ इस लिये कहा गया कि वोह निहायत वाज़ेह बात पर मो'तरिज़ हुए बा वुजूदे कि अम्बियाए साबिक़ीन ने नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां के ख़साइस में आप का लक़ब ज़ुल क़िब्लतैन (दो क़िब्लों वाला) ज़िक्र फ़रमाया और तह़्वीले क़िब्ला (क़िब्ले का तब्दील होना) उस की दलील है कि येही वोह नबी हैं जिन की पहले अम्बिया ख़बर देते आए ! ऐसे रोशन निशान से फ़ाएदा न उठाना और मो'तरिज़ होना कमाले ह़माक़त है। **256 :** क़िब्ला उस जिहत को कहते हैं जिस की तरफ़ आदमी नमाज़ में मुंह करता है, यहां क़िब्ला से बैतुल मक़्दिस मुराद है। **257 :** उसे इख़्तियार है जिसे चाहे क़िब्ला बनाए किसी को क्या जाए ए'तिराज़ ! बन्दे का काम फ़रमां बरदारी है। **258 :** दुन्या व आख़िरत में। **मस्अला :** दुन्या में तो येह कि मुसल्मान की शहादत मोमिन काफ़िर सब के हक़ में शरअ़न मो'तबर है और काफ़िर की शहादत मुसल्मान पर मो'तबर नहीं। **मस्अला :** इस से येह भी मा'लूम हुवा कि इस उम्मत का इज्माअ़ हुज्जते लाज़िमुल क़बूल है। **मस्अला :** अम्वात के हक़ में भी इस उम्मत की शहादत मो'तबर है रह़मत व अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते इस के मुताबिक़ अ़मल करते हैं। सिहाह की ह़दीस में है कि सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के सामने एक जनाज़ा गुज़रा सहाबा ने उस की ता'रीफ़ की हुज़ूर ने फ़रमाया : वाजिब हुई, फिर दूसरा जनाज़ा गुज़रा सहाबा ने उस की बुराई की हुज़ूर ने फ़रमाया : वाजिब हुई। हज़रते उ़मर ने दरयाफ़्त किया कि हुज़ूर क्या चीज़ वाजिब हुई ? फ़रमाया : पहले जनाज़े की तुम ने ता'रीफ़ की उस के लिये जन्नत वाजिब हुई, दूसरे की तुम ने बुराई बयान की उस के लिये दोज़ख़ वाजिब हुई, तुम ज़मीन में **अल्लाह** के शुहदा (गवाह) हो, फिर हुज़ूर ने येह आयत तिलावत फ़रमाई। **मस्अला :** येह तमाम शहादतें सुलह़ाए उम्मत और अहले सिद्क़ के साथ ख़ास हैं और इन के मो'तबर होने के लिये ज़बान की निगह दाश्त शर्त है। जो लोग ज़बान की एह़तियात नहीं करते और बे जा ख़िलाफ़े शरअ़ कलिमात उन की ज़बान से निकलते हैं और नाह़क़ ला'नत करते हैं सिहाह की ह़दीस में है कि रोज़े क़ियामत न वोह शाफ़ेअ़ होंगे न शाहिद। इस उम्मत की एक शहादत येह भी है कि आख़िरत में जब तमाम अव्वलीनो आख़िरीन जम्अ़ होंगे और कुफ़्फ़ार से फ़रमाया जाएगा : क्या तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से डराने और अह़काम पहुंचाने वाले नहीं आए ? तो वोह इन्कार करेंगे और कहेंगे कोई नहीं आया। हज़राते अम्बिया से दरयाफ़्त फ़रमाया जाएगा। वोह अ़र्ज़ करेंगे कि येह झूटे हैं हम ने इन्हें तब्लीग़ की, इस पर उन से اِقَامَةُ لِلْحُجَّةِ दलील त़लब की जाएगी ! वोह अ़र्ज़ करेंगे कि उम्मते मुह़म्मदिय्यह हमारी शाहिद है, येह उम्मत पैग़म्बरों की शहादत देगी कि इन हज़रात ने तब्लीग़ फ़रमाई, इस पर गुज़श्ता उम्मत के कुफ़्फ़ार कहेंगे इन्हें क्या मा'लूम येह हम से बा'द हुए थे, दरयाफ़्त फ़रमाया जाएगा : तुम कैसे जानते हो ? येह अ़र्ज़ करेंगे या रब ! तूने हमारी तरफ़ अपने रसूल मुह़म्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को भेजा, क़ुरआने पाक नाज़िल फ़रमाया, उन के ज़रीए से हम क़त्ई व यक़ीनी तौर पर जानते हैं कि हज़राते अम्बिया ने फ़र्ज़े तब्लीग़ अ़ला वज्हिल कमाल अदा किया। फिर सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से आप की उम्मत की निस्बत दरयाफ़्त फ़रमाया जाएगा, हुज़ूर उन की तस्दीक़ फ़रमाएंगे। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि अश्याए मा'रूफ़ा में शहादत तसामोअ़ (सुनने) के साथ भी मो'तबर है या'नी जिन चीज़ों का इल्मे यक़ीनी सुनने से ह़ासिल हो उस पर भी शहादत दी जा सकती है। **259 :** उम्मत को तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की इत्तिलाअ़ के ज़रीए से अह़वाले उमम व तब्लीग़े अम्बिया का इल्मे क़त्ई व यक़ीनी ह़ासिल है और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ब करमे इलाही नूरे नुबुव्वत से हर शख़्स के ह़ाल और उस

النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَيَكْتُمُوْنَ مَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاَعْتَدْنَا

से बुख़्ल के लिये कहें[118] और **अल्लाह** ने जो उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया है उसे छुपाएं[119] और काफ़िरों के लिये

لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿٣٧﴾ وَالَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ رِئَآءَ النَّاسِ

हम ने ज़िल्लत का अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है और वोह जो अपने माल लोगों के दिखावे को ख़र्च करते हैं[120]

وَلَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَمَنْ يَّكُنِ الشَّيْطٰنُ لَهٗ

और ईमान नहीं लाते **अल्लाह** और न क़ियामत पर और जिस का मुसाहिब (साथी व मुशीर) शैत़ान हुवा[121]

قَرِيْنًا فَسَآءَ قَرِيْنًا ﴿٣٨﴾ وَمَاذَا عَلَيْهِمْ لَوْ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ

तो कितना बुरा मुसाहिब है और उन का क्या नुक़्सान था अगर ईमान लाते **अल्लाह** और क़ियामत पर

وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِهِمْ عَلِيْمًا ﴿٣٩﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ

और **अल्लाह** के दिये में से उस की राह में ख़र्च करते[122] और **अल्लाह** उन को जानता है **अल्लाह** एक ज़र्रा भर

مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۚ وَاِنْ تَكُ حَسَنَةً يُّضٰعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَّدُنْهُ اَجْرًا

ज़ुल्म नहीं फ़रमाता और अगर कोई नेकी हो तो उसे दूनी करता और अपने पास से बड़ा सवाब

عَظِيْمًا ﴿٤٠﴾ فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ بِشَهِيْدٍ وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ

देता है तो कैसी होगी जब हम हर उम्मत से एक गवाह लाएं[123] और ऐ महबूब तुम्हें उन सब पर गवाह और निगहबान

شَهِيْدًا ﴿٤١﴾ يَوْمَئِذٍ يَّوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَعَصَوُا الرَّسُوْلَ لَوْ تُسَوّٰى

बना कर लाएं[124] उस दिन तमन्ना करेंगे वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया और रसूल की ना फ़रमानी की काश उन्हें मिट्टी में

118 : बुख़्ल येह है कि ख़ुद खाए दूसरे को न दे। "शुह" येह है कि न खाए न खिलाए, **सख़ा** येह है कि ख़ुद भी खाए और दूसरों को भी खिलाए, **जूद** येह है कि आप न खाए दूसरे को खिलाए। **शाने नुज़ूल :** येह आयत यहूद के ह़क़ में नाज़िल हुई जो सय्यिदे आ़लम ﷺ की सिफ़त बयान करने में बुख़्ल करते और छुपाते थे। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि इ़ल्म को छुपाना मज़्मूम है। 119 : ह़दीस शरीफ़ में है कि **अल्लाह** को पसन्द है कि बन्दे पर उस की ने'मत ज़ाहिर हो। **मस्अला : अल्लाह** की ने'मत का इज़्हार इख़्लास के साथ हो तो येह भी शुक्र है और इस लिये आदमी को अपनी हैसिय्यत के लाइक़ जाइज़ लिबासों में बेहतर पहनना मुस्तह़ब है। 120 : बुख़्ल के बा'द सर्फ़े बे जा की बुराई बयान फ़रमाई कि जो लोग मह़्ज़ नुमूदो नुमाइश और नाम आवरी के लिये ख़र्च करते हैं और रिज़ाए इलाही उन्हें मक़्सूद नहीं होती जैसे कि मुश्रिकीन व मुनाफ़िक़ीन, येह भी उन्हीं के हुक्म में हैं जिन का हुक्म ऊपर गुज़र गया। 121 : दुन्या व आख़िरत में। दुन्या में तो इस त़रह़ कि वोह शैत़ानी काम कर के उस को ख़ुश करता रहा और आख़िरत में इस त़रह़ कि हर काफ़िर एक शैत़ान के साथ आतिशी ज़न्जीर में जकड़ा हुवा होगा (خازن) 122 : इस में सरासर उन का नफ़्अ़ ही था। 123 : उस नबी को और वोह अपनी उम्मत के ईमान व कुफ़्र व निफ़ाक़ और तमाम अफ़्आ़ल पर गवाही दें क्यूं कि अम्बिया अपनी उम्मतों के अफ़्आ़ल से बा ख़बर होते हैं। 124 : कि तुम नबिय्युल अम्बिया और सारा आ़लम तुम्हारी उम्मत।

هُوَ اجْتَبٰىكُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِى الدِّيْنِ مِنْ حَرَجٍ ؕ مِلَّةَ اَبِيْكُمْ

उस ने तुम्हें पसन्द किया[199] और तुम पर दीन में कुछ तंगी न रखी[200] तुम्हारे बाप

اِبْرٰهِيْمَ ؕ هُوَ سَمّٰىكُمُ الْمُسْلِمِيْنَ ۙ۵ مِنْ قَبْلُ وَفِىْ هٰذَا لِيَكُوْنَ

इब्राहीम का दीन[201] **अल्लाह** ने तुम्हारा नाम मुसल्मान रखा है अगली किताबों में और इस कुरआन में ताकि रसूल

الرَّسُوْلُ شَهِيْدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ ۖ فَاَقِيْمُوا

तुम्हारा निगहबान व गवाह हो[202] और तुम और लोगों पर गवाही दो[203] तो नमाज़

الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاعْتَصِمُوْا بِاللّٰهِ ؕ هُوَ مَوْلٰىكُمْ ۚ فَنِعْمَ الْمَوْلٰى

बरपा रखो[204] और ज़कात दो और **अल्लाह** की रस्सी मज़बूत थाम लो[205] वोह तुम्हारा मौला है तो क्या ही अच्छा मौला

وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ﴿٧٨﴾ ع

और क्या ही अच्छा मददगार

ख़ास **अल्लाह** के लिये हों और इबादत में इख़्लास इख़्तियार करो। **197 :** सिलए रेहमी मकारिमुल अख़्लाक़ वग़ैरा नेकियां। **198 :** या'नी निय्यते सादिक़ा ख़ालिसा के साथ ए'लाए दीन के लिये **199 :** अपने दीन व इबादत के लिये। **200 :** बल्कि ज़रूरत के मौक़ओं पर तुम्हारे लिये सहूलत कर दी जैसे कि सफ़र में नमाज़ का क़स्र और रोज़े के इफ़्तार की इजाज़त और पानी न पाने या पानी के ज़रर करने की हालत में ग़ुस्ल और वुज़ू की जगह तयम्मुम, तो तुम दीन की पैरवी करो। **201 :** जो दीने मुहम्मदी में दाख़िल है। **202 :** रोज़े क़ियामत कि तुम्हारे पास ख़ुदा का पयाम पहुंचा दिया। **203 :** कि उन्हें उन रसूलों ने अह़कामे ख़ुदावन्दी पहुंचा दिये, **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हें येह इ़ज़्ज़तो करामत अ़ता फ़रमाई। **204 :** इस पर मुदावमत करो **205 :** और उस के दीन पर क़ाइम रहो।

فَأَنجَيْنَاهُ وَأَصْحَابَ السَّفِينَةِ وَجَعَلْنَاهَا آيَةً لِّلْعَالَمِينَ ﴿١٥﴾ وَإِبْرَاهِيمَ

तो हम ने उसे[32] और कश्ती वालों को[33] बचा लिया और उस कश्ती को सारे जहां के लिये निशानी किया[34] और इब्राहीम को[35]

إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ ۖ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ

जब उस ने अपनी क़ौम से फ़रमाया कि **अल्लाह** को पूजो और उस से डरो इस में तुम्हारा भला है अगर तुम

تَعْلَمُونَ ﴿١٦﴾ إِنَّمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا وَتَخْلُقُونَ إِفْكًا ۚ

जानते तुम तो **अल्लाह** के सिवा बुतों को पूजते हो और निरा झूट गढ़ते हो[36]

إِنَّ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ لَا يَمْلِكُونَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوا

बेशक वोह जिन्हें तुम **अल्लाह** के सिवा पूजते हो तुम्हारी रोज़ी के कुछ मालिक नहीं तो **अल्लाह**

عِندَ اللَّهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوهُ وَاشْكُرُوا لَهُ ۖ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿١٧﴾ وَإِن

के पास रिज़्क़ ढूंडो[37] और उस की बन्दगी करो और उस का एहसान मानो तुम्हें उसी की तरफ़ फिरना है[38] और अगर

تُكَذِّبُوا فَقَدْ كَذَّبَ أُمَمٌ مِّن قَبْلِكُمْ ۖ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ

तुम झुटलाओ[39] तो तुम से पहले कितने ही गुरोह झुटला चुके हैं[40] और रसूल के ज़िम्मे नहीं मगर साफ़

الْمُبِينُ ﴿١٨﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللَّهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ۚ إِنَّ

पहुंचा देना और क्या उन्हों ने न देखा **अल्लाह** क्यूंकर ख़ल्क़ की इब्तिदा फ़रमाता है[41] फिर उसे दोबारा बनाएगा[42] बेशक

ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿١٩﴾ قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ بَدَأَ

येह **अल्लाह** को आसान है[43] तुम फ़रमाओ ज़मीन में सफ़र कर के देखो[44] **अल्लाह** क्यूंकर पहले

الْخَلْقَ ۚ ثُمَّ اللَّهُ يُنشِئُ النَّشْأَةَ الْآخِرَةَ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ

बनाता है[45] फिर **अल्लाह** दूसरी उठान उठाता है[46] बेशक **अल्लाह** सब कुछ

पचास कम हज़ार (950) बरस दा'वत फ़रमाते रहे और इस तवील मुद्दत में उन की क़ौम के बहुत क़लील लोग ईमान लाए, तो आप कुछ ग़म न करें क्यूं कि بِفَضْلِهٖ تَعَالٰی आप की क़लील मुद्दत की दा'वत से ख़ल्क़े कसीर मुशर्रफ़ ब ईमान हो चुकी है। **32 :** या'नी हज़रते नूह عَلَیْهِ السَّلَام को **33 :** जो आप के साथ थे, उन की ता'दाद अठत्तर थी, निस्फ़ मर्द निस्फ़ औरतें। उन में हज़रते नूह عَلَیْهِ السَّلَام के फ़रज़न्द साम व हाम व याफ़िस और उन की बीबियां भी शामिल हैं **34 :** कहा गया है कि वोह कश्ती "जूदी" पहाड़ पर मुद्दते दराज़ तक बाक़ी रही। **35 :** याद करो! **36 :** कि बुतों को ख़ुदा का शरीक कहते हो। **37 :** वोही राज़िक़ है। **38 :** आख़िरत में। **39 :** और मुझे न मानो तो इस से मेरा कोई ज़रर नहीं। मैं ने राह दिखा दी, मो'जिज़ात पेश कर दिये, मेरा फ़र्ज़ अदा हो गया। इस पर भी अगर तुम न मानो **40 :** अपने अम्बिया को। जैसे कि क़ौमे नूह व आद व समूद वग़ैरा। उन के झुटलाने का अन्जाम येही हुवा कि **अल्लाह** तआला ने हलाक किया। **41 :** कि पहले उन्हें नुत्फ़ा बनाता है, फिर ख़ून बस्ता की सूरत देता है, फिर गोश्त पारा बनाता है, इस तरह तदरीजन उन की ख़िल्क़त को मुकम्मल करता है। **42 :** आख़िरत में बअ़्स के वक़्त। **43 :** या'नी पहली बार पैदा करना और मरने के बा'द फिर दोबारा बनाना। **44 :** गुज़श्ता क़ौमों के दियार व आसार को कि

لِاَحَدٍ عِنْدَهٗ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰۤى ۙ﴿۱۹﴾ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْاَعْلٰى ۚ﴿۲۰﴾

का उस पर कुछ एह़सान नहीं जिस का बदला दिया जाए[21] सिर्फ़ अपने रब की रिज़ा चाहता जो सब से बुलन्द है

وَلَسَوْفَ يَرْضٰى ﴿۲۱﴾ ع

और बेशक क़रीब है कि वोह राज़ी होगा[22]

ایاتها ۱۱ ۹۳ سُوْرَةُ الضُّحٰى مَكِّيَّةٌ ۱۱ رکوعها ۱

सूरए दुहा मक्किय्या है, इस में ग्यारह आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह़्म वाला[1]

وَالضُّحٰى ۙ﴿۱﴾ وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى ۙ﴿۲﴾ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ؕ﴿۳﴾ وَ

चाश्त की क़सम[2] और रात की जब पर्दा डाले[3] कि तुम्हें तुम्हारे रब ने न छोड़ा और न मक्रूह जाना और

لَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى ؕ﴿۴﴾ وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى ؕ﴿۵﴾

बेशक पिछली तुम्हारे लिये पहली से बेहतर है[4] और बेशक क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हें[5] इतना देगा कि तुम राज़ी हो जाओगे[6]

21 **शाने नुज़ूल :** जब ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते बिलाल को बहुत गिरां क़ीमत पर ख़रीद कर आज़ाद किया तो कुफ़्फ़ार को ह़ैरत हुई और उन्हों ने कहा कि ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ऐसा क्यूं किया, शायद बिलाल का उन पर कोई एह़सान होगा जो उन्हों ने इतनी गिरां क़ीमत दे कर ख़रीदा और आज़ाद किया, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और ज़ाहिर फ़रमा दिया गया कि ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह फ़े'ल मह्ज़ **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा के लिये है किसी के एह़सान का बदला नहीं और न उन पर ह़ज़रते बिलाल वग़ैरा का कोई एह़सान है। ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बहुत से लोगों को उन के इस्लाम के सबब ख़रीद कर आज़ाद किया। 22 : उस ने'मतो करम से जो **अल्लाह** तआ़ला उन को जन्नत में अ़ता फ़रमाएगा। 1 : "सूरए वद्दुहा" मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, ग्यारह आयतें, चालीस कलिमे, एक सो बहत्तर ह़र्फ़ हैं। **शाने नुज़ूल :** एक मरतबा ऐसा इत्तिफ़ाक़ हुवा कि चन्द रोज़ वह़्य न आई तो कुफ़्फ़ार ने ब त़रीक़े त़ा'न कहा कि मुह़म्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को उन के रब ने छोड़ दिया और मक्रूह जाना इस पर "وَالضُّحٰى" नाज़िल हुई। 2 : जिस वक़्त कि आफ़्ताब बुलन्द हो क्यूं कि येह वक़्त वोही है जिस में **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को अपने कलाम से मुशर्रफ़ किया और इसी वक़्त जादूगर सज्दे में गिरे। **मस्अला :** चाश्त की नमाज़ सुन्नत है और इस का वक़्त आफ़्ताब के बुलन्द होने से क़ब्ले ज़वाल तक है, इमाम साह़िब के नज़्दीक चाश्त की नमाज़ दो रक्अ़तें हैं या चार एक सलाम के साथ। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि दुहा से दिन मुराद है। 3 : और उस की तारीकी आ़म हो जाए। इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि चाश्त से मुराद वोह चाश्त है जिस में **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام से कलाम फ़रमाया। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि चाश्त इशारा है नूरे जमाले मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की त़रफ़ और शब किनाया है आप के गेसूए अम्बरीन से। (روح البیان) 4 : या'नी आख़िरत दुन्या से बेहतर, क्यूं कि वहां आप के लिये मक़ामे मह़्मूद व ह़ौज़े मौरूद व ख़ैरे मौऊ़द और तमाम अम्बिया व रुसुल पर तक़द्दुम और आप की उम्मत का तमाम उम्मतों पर गवाह होना और आप की शफ़ाअ़त से मोमिनीन के मर्तबे और दरजे बुलन्द होना और बे इन्तिहा इ़ज़्ज़तें और करामतें हैं जो बयान में नहीं आतीं और मुफ़स्सिरीन ने इस के येह मा'ना भी बयान फ़रमाए हैं कि आने वाले अह़्वाल आप के लिये गुज़श्ता से बेहतर व बरतर हैं गोया कि ह़क़ तआ़ला का वा'दा है कि वोह रोज़ बरोज़ आप के दरजे बुलन्द करेगा और इ़ज़्ज़त पर इ़ज़्ज़त और मन्सब पर मन्सब ज़ियादा फ़रमाएगा और साअ़त ब साअ़त आप के मरातिब तरक़्क़ियों में रहेंगे। 5 : दुन्या व आख़िरत में 6 : **अल्लाह** तआ़ला का अपने ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से येह वा'दए करीमा उन ने'मतों को भी शामिल है जो आप को दुन्या में अ़ता फ़रमाईं, कमाले नफ़्स और उ़लूमे अव्वलीनो आख़िरीन और ज़ुहूरे अम्र और ए'लाए दीन और वोह फ़ुतूहात जो अ़ह्दे मुबारक में हुईं और अ़ह्दे सह़ाबा में हुईं और ता क़ियामत मुसल्मानों को होती रहेंगी और

बाब 19 : अल्लाह तआला का इर्शाद, और मैंने इसी तरह तुम्हें उम्मते वस्त बना दिया (या'नी मोतदिल और सीधी राह पर चलने वाली) और उसके बारे में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जमाअत को लाज़िम पकड़ने का हुक्म दिया और आपकी मुराद जमाअत से अहले इल्म की जमाअत थी।

١٩- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى : ﴿وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا﴾ [البقرة ١٤٣] وَمَا أَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ بِلُزُومِ الْجَمَاعَةِ وَهُمْ أَهْلُ الْعِلْمِ.

7349. हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमसे

٧٣٤٩- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ،

अबू उसामा ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा हमसे अबू सालेह (ज़क्वान) ने बयान किया, उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया क़यामत के दिन नूह (अ.) को लाया जाएगा और उनसे पूछा जाएगा, क्या तुमने अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा दिया था? वो अर्ज़ करेंगे कि हाँ ऐ रब! फिर उनकी उम्मत से पूछा जाएगा कि क्या इन्होंने तुम्हें अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा दिया था? वो कहेंगे कि हमारे पास कोई डराने वाला नहीं आया। अल्लाह तआला हज़रत नूह (अ.) से पूछेगा, तुम्हारे गवाह कौन हैं? नूह (अ.) अर्ज़ करेंगे कि मुहम्मद (ﷺ) और उनकी उम्मत। फिर तुम्हें लाया जाएगा और तुम लोग उनके हक़ में शहादत (गवाही) दोगे, फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ये आयत पढ़ी, और इसी तरह मैंने तुम्हें दरम्यानी उम्मत बनाया, कहा कि वस्त बमा'नी अदल (मियानारवी) है, ताकि तुम लोगों के लिए गवाह बनो और रसूल तुम पर गवाह बने। इस्हाक़ बिन मंसूर से जा'फ़र बिन औन ने रिवायत किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे अबू सालेह ने, उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने यही हदीष बयान की। (राजेअ : 3339)

حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، حَدَّثَنَا أَبُو صَالِحٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يُجَاءُ بِنُوحٍ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، فَيُقَالُ لَهُ: هَلْ بَلَّغْتَ؟ فَيَقُولُ: نَعَمْ. يَا رَبِّ فَتُسْأَلُ أُمَّتُهُ هَلْ بَلَّغَكُمْ فَيَقُولُونَ مَا جَاءَنَا مِنْ نَذِيرٍ فَيَقُولُ مَنْ شُهُودُكَ فَيَقُولُ مُحَمَّدٌ وَأُمَّتُهُ فَيُجَاءُ بِكُمْ فَتَشْهَدُونَ)) ثُمَّ قَرَأَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ﴿وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا﴾ - قَالَ عَدْلاً - ﴿لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا﴾ [البقرة : ١٤٣]. وَعَنْ جَعْفَرِ بْنِ عَوْنٍ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِهَذَا.

[راجع: ٣٣٣٩]

तश्रीह : हालाँकि मुसलमानों ने हज़रत नूह (अ.) को दुनिया में नहीं देखा न उनकी उम्मत वालों को मगर यक़ीन के साथ गवाही देंगे क्योंकि जो बात अल्लाह और रसूल के फ़र्माने से और तवातुर के साथ सुनी जाए वो मिष्ल देखी हुई बात की यक़ीनी होती है और दुनिया में भी ऐसी गवाही ली जाती है। मष़लन एक शख़्स किसी का बेटा हो और सब लोगों में मशहूर हो तो ये गवाही दे सकते हैं कि वो फ़लाँ शख़्स का बेटा है हालाँकि उसको पैदा होते वक़्त आँख से किसी ने नहीं देखा। इस आयत से कुछ ने ये निकाला है कि इज्माअ हुज्जत है क्योंकि अल्लाह तआला ने इस उम्मत को उम्मते आदिला फ़र्माया और ये मुम्किन नहीं कि सारी उम्मत का इज्माअ नाहक़ और बातिल पर हो जाए।

M-09825696131

يَحْيَى عَنْ أَبِي سَلَمَةَ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَلاَ أُحَدِّثُكُمْ حَدِيْثًا عَنِ الدَّجَّالِ مَا حَدَّثَ بِهِ نَبِيٌّ قَوْمَهُ: إِنَّهُ أَعْوَرُ، وَإِنَّهُ يَجِيءُ مَعَهُ بِمِثَالِ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ، فَالَّتِي يَقُولُ إِنَّهَا الْجَنَّةُ هِيَ النَّارُ، وَإِنِّي أُنْذِرُكُمْ كَمَا أَنْذَرَ بِهِ نُوحٌ قَوْمَهُ)). [راجع: ٣٠٥٧]

किया, उनसे यह्या ने, उनसे अबू सलमा ने और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, आपने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क्यूँ न मैं तुम्हें दज्जाल के बारे में एक ऐसी बात बता दूँ जो किसी नबी ने अपनी क़ौम को नहीं बताई। वो काना होगा और जन्नत और जहन्नम जैसी चीज़ लाएगा। पस जिसे वो जन्नत कहेगा दरह क़ीक़त वही जहन्नम होगी और मैं तुम्हें उसके फ़ित्ने से इसी त़रह डराता हूँ, जैसे नूह़ (अलै.) ने अपनी क़ौम को डराया था। (राजेअ़ : 3057)

तश्रीह : अल्लाह पाक अपने बन्दों को आज़माने के लिये दज्जाल को पहले कुछ कामों की त़ाक़त दे देगा फिर बाद में उसकी आजिज़ी ज़ाहिर कर देगा, ऐसी सूरत ख़ुद बता देगी कि वो अल्लाह नहीं है। अह़ादीष़ में नूह़ (अलै.) का ज़िक्र आया है बाब से यही मुनासबत है।

٣٣٣٩- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنِ زِيَادٍ حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((يَجِيْءُ نُوحٌ وَأُمَّتُهُ. فَيَقُولُ اللهُ تَعَالَى: هَلْ بَلَّغْتَ؟ فَيَقُولُ: نَعَمْ أَيْ رَبِّ. فَيَقُولُ لأُمَّتِهِ: هَلْ بَلَّغَكُمْ؟ فَيَقُولُونَ: لاَ، مَا جَاءَنَا مِنْ نَبِيٍّ. فَيَقُولُ لِنُوحٍ مَنْ يَشْهَدُ لَكَ؟ فَيَقُولُ: مُحَمَّدٌ ﷺ وَأُمَّتُهُ، فَنَشْهَدُ أَنَّهُ قَدْ بَلَّغَ، وَهُوَ قَوْلُهُ جَلَّ ذِكْرُهُ: ﴿وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ﴾ [البقرة: ١٤٣] وَالْوَسَطُ الْعَدْلُ.

[طرفاه في: ٤٤٨٧، ٧٣٤٩]

3339. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, हमसे अ़ब्दुल वाह़िद बिन ज़ियाद ने बयान किया, हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे अबू स़ालेह़ ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया (क़यामत के दिन) नूह़ (अलै.) बारगाहे इलाही में ह़ाज़िर होंगे। अल्लाह तआला दरयाफ़्त करेगा, क्या (मेरा पैग़ाम) तुमने पहुँचा दिया था? नूह़ (अलै.) अ़र्ज़ करेंगे मैंने तेरा पैग़ाम पहुँचा दिया था, ऐ रब्बुल इ़ज़्ज़त! अब अल्लाह तआला उनकी उम्मत से पूछेगा, क्या (नूह़ अलै. ने) ने तुम तक मेरा पैग़ाम पहुँचा दिया था? वो जवाब देंगे नहीं, हमारे पास तेरा कोई नबी नहीं आया। इस पर अल्लाह तआला नूह़ (अलै.) से पूछेगा, इसके लिये आपकी त़रफ़ से कोई गवाही भी दे सकता है? वो अ़र्ज़ करेंगे कि मुह़म्मद (ﷺ) और उनकी उम्मत (के लोग मेरे गवाह हैं) चुनाँचे हम उस बात की शहादत देंगे कि नूह़ (अलै.) ने पैग़ामे अल्लाह अपनी क़ौम तक पहुँचा दिया था और यही मफ़्हूम अल्लाह जल्ला ज़िक्रुहू के इस इर्शाद का है कि, और इसी त़रह हमने तुम्हें उम्मते वस्त़ बनाया, ताकि तुम लोगों पर गवाही दो और वस्त़ के मा'नी दरम्यानी के हैं। (दीगर मक़ाम : 4487, 7349)

٣٣٤٠- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ حَدَّثَنَا أَبُو حَيَّانَ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ:

3340. मुझसे इस्ह़ाक़ बिन नस़र ने बयान किया, हमसे मुह़म्मद बिन उ़बैद ने बयान किया, हमसे अबू ह़य्यान यह्या बिन सईद ने बयान किया, उनसे अबू ज़रआ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.)